centre should take over the administration of a state where such incidents take place frequently and on a large-scale. In the end, if workers of a political party indulge in such activities and atrocities in a certain area and they continue their activities despite serious warnings from the Government, the Branch of the party concerned should be declared illegal in the effected area.

Shri Molahu Prasad (Bansgaon): Sir, Harijans have been oppressed in this country for hundreds of years. They always suffered at the hands of our society. They were never allowed to progress. They were always denied human rights and deprived of opportunities to rise in life. Even after twenty years of independence they are receiving barbarious treatment from caste Hindus. Atrocities are being committed on them, Harijan women are being rendered naked and led in procession.

It is deplorable that Harijans are meted out a stepmotherly treatment even in political field. They are not appointed as Governors and Ambassadors which are important offices. Even in union cabinet, they have not been given adequate representation. The Government did never take any concrete and positive steps to solve the problems of Scheduled Castes and Scheduled Tribes. It could even amend the constitution for the purpose.

The candidates of Scheduled Castes and Scheduled Tribes are neither taken in the Police Force nor selected for administrative posts. Such incidents could be avoided and checked if these people were provided jobs in the Police Force and were appointed on administrative posts.

प्रधान मंत्री, अणुशक्ति मंत्री, योजना मंत्री तथा वैदेशिक-कार्य मंत्री (श्रीमती इन्दिरा गांधी) : यह बड़ी चिन्ता और लज्जा की बात है कि हमारे देश में बर्बरतापूर्ण अत्याचार हो रहे हैं। यह वास्तव में बड़े दुर्भाग्य की बात है कि इतने वर्षों के बाद भी हमारे यहां ऐसी घटनाएं हो रही हैं और सामाजिक चेतना का अभाव है। वास्तव में यह सम्पूर्ण राष्ट्र के लिये लज्जा की बात है। इस बुराई को दूर करने का एकमात्र उपाय यही है कि हम एक दूसरे पर दोषारोपण करने की अपेक्षा अपने दृष्टिकोण बदलने की कोशिश करें और अपने हरिजन, आदिवासी तथा अल्पसंख्यक भाई-बहनों के लिये अच्छा वातावरण तैयार करें।

हम सबको मिलकर वर्ग, जाति तथा साम्प्रदायिकता की भावनाओं का मुकाबला करना जरूरी हैं। हमारे लिये यह भी जरूरी है कि हम ऐसे वक्तव्य न दें जिनसे उत्तेजना फैलती हो। श्रीमती विजय लक्ष्मी पंडित ने इलाहाबाद में कुछ जातियों में व्याप्त भय का उल्लेख किया है। भय मनोवेगों में सबसे अधिक खतरनाक भाव है। जब कोई उसका शिकार हो जाता है, तो उसका खुद अपने पर काबू नहीं रहता। इसलिये हमारे लिये यह जरूरी है कि हम ऐसा वातावरण पैदा न करें जिससे किसी जाति में भय अथवा असुरक्षा की भावना उत्पन्न हो जाये।

आज आवश्यकता इस बात की है कि हम सब मिलकर अपने सभी नागरिकों, विशेषत: गरीबों के लिये समान अवसर प्रदान करने और जनता में आधारभूत एकता को मजबूत बनाने का प्रयत्न करें। इन जघन्य अपराधों के लिये केवल जिम्मेदार व्यक्तियों को ही दोषी ठहराना पर्याप्त नहीं है, इसके लिये हमारी सम्पूर्ण सामाजिक प्रणाली ही दोषपूर्ण है। जब तक हम इस सामाजिक प्रणाली में परिवर्तन करने के लिए तैयार न हों, तब तक इस प्रणाली को भी दोषी ठहराने

से भी कोई लाभ नहीं होगा । अपराधियों तथा दोषी व्यक्तियों को कड़ा दण्ड देना जरूरी है । ऐसे मामलों में दया का कोई प्रश्न ही नहीं उठता । मैं इस सभा और सारे देश से अपील करती हूं कि हम सब मिलकर नई जीवन पद्धति के विकास का आधार तैयार करने के लिये आवश्यक आर्थिक, राजनैतिक तथा सामाजिक कदम उठायें ।

श्री विश्वनाथ मेनन (एरणाकुलम) : इन दुःखद घटनाओं की विशेषतः आन्ध्र-प्रदेश में हरिजन लड़के के बारे में जो घटना हुई, निन्दा करना जरूरी है । यह समस्या केवल सामाजिक ही नहीं बल्कि आर्थिक भी है । हम उन भंयकर परिस्थितियों की ओर आखें बन्द करके नहीं रह सकते जिनमें वे रह रहे हैं । उनके पास अपनी भूमि नहीं है । प्रश्न यह है कि क्या हम उन्हें भूमि देकर तथा समाज में उनका स्तर उठाकर उनकी आर्थिक समस्या को हल कर सकते है । उन मूल समस्याओं को हल किये बिना इस समस्या का समाधान नहीं हो सकता ।

मुझे तालुक रायत संगम, आन्ध्र से एक तार मिला है जिसमें कहा गया है कि जिस गांव में हरिजन लड़के को जिन्दा जला दिया गया था, उसके निकट एक गांव में हरिजनों पर अमानुषिक अत्याचार किये जा रहे है । ऐसी घटनाओं की केवल निन्दा कर देने से ही काम नहीं चलेगा । वास्तव में हम इस बात से इन्कार नहीं कर सकते कि इसके लिये मुख्यतः जिम्मेदार सरकार है—सत्तारुढ़ दल है । इस समस्या का व्यावहारिक हल ढूंढना आवश्यक है और इसे व्यावहारिक ढंग से ही हल भी करना होगा । आप उन्हें धन दे सकते हैं तथा अन्य प्रकार से सहायता कर सकते है लेकिन प्रश्न यह है कि क्या हम उन्हें भूमि देने के लिए तैयार है । सरकार ने ऐसी बेदखलियों को रोकने के लिये क्या कार्यवाही की है ? महात्मा गांधी ने कहा था अस्पृश्यता का समाप्त होना जरूरी है और उन्होंने इसके लिये काम भी किया जबकि उनके हाथ में ताकत भी नहीं थी, किन्तु उनके तथाकथित अनुयायियों के पास तो शक्ति भी है, फिर भी उन्होंने इस सम्बन्ध में क्या किया है ?

आप उनको न्यूनतम मजूरी तो दें ताकि उन्हें दिन में दोनों समय भोजन तो मिल जाये मेरी प्रार्थना है कि दोषी व्यक्तियों के विरुद्ध कार्यवाही की जाये ।

Shri Sadhu Ram (Phillaur): Harijans constitute a major portion of the total population of the country, but still the Hindu community does not behave with them properly because the people do not want these Harijans to prosper.

It is a matter of great shame that such things are happening in the country even after 20 years of independence. The Central Government should not leave the Harijans on the mercy of State Governments. The Central Government should protect the back ward classes and if necessary, the constitution may also be amended.

All the political parties should raise their voice against the atrocities being committed on Harijans. Such type of literature which propagates that the Harijans are slaves, should be banned.